कुमारी चम्पा
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज

M.A. SEM. I. Paper I

हिन्दी भाषा का उद्भव : अपभ्रंश, अवहट्ठ, पुरानी हिन्दी

हिन्दी विश्व की लगभग 3,000 भाषाओं में एक है। भाषा परिवार के आधार पर हिन्दी भारोपीय परिवार की भाषा है। भारत में चार भाषा परिवार हैं — ① भारोपीय ② द्रविड ③ आस्ट्रिक ④ चिनी तिब्बती। हिन्दी भारोपीय भाषा परिवार के भारतीय ईरानी शाखा के भारतीय आर्य उपभाषा से विकसित एक भाषा है। भारतीय आर्यभाषाओं के काल को मोटे तौर पर तीन कालखंडों में विभक्त किया गया है —

① प्राचीन भारतीय आर्यभाषा काल (1500 ई० पू० से 500 ई० पू० तक)
② मध्य भारतीय आर्यभाषा काल (500 ई० पू० से 1000 ई० तक)
③ आधुनिक भारतीय आर्यभाषा काल (1000 ई० से अब तक)

① प्राचीन भारतीय आर्यभाषा काल में वैदिक संस्कृत एवं लौकिक संस्कृत दो भाषाएं थीं। चारो वेद, ब्राह्मण ग्रंथ, उपनिषद इसी काल की रचना है। ऋग्वेद संस्कृत का प्राचीनतम ग्रंथ है। लौकिक संस्कृत में रामायण महाभारत आदि लिखे गए हैं।

② मध्य भारतीय आर्यभाषा काल में तीन भाषाएं विकसित हुई:
1. पालि भाषा (500 ई० पू० से 1 ई० तक)
11. प्राकृत भाषा (1 ई० से 1000 ई० तक)
111. अपभ्रंश भाषा (500 ई० से 1000 ई० तक)

1. पालि को मागधी भाषा भी कहा जाता है यह बौद्ध धर्म की भाषा है। त्रिपिटक पालि में लिखे गए है।
त्रिपिटक — (क) सुत्त पिटक, विनय पिटक (ग) अभिधम्म पिटक
11. प्राकृत — प्राकृत भाषा बोल-चाल की भाषा होने के कारण पण्डितों में प्रचलित नहीं रही।
जैन साहित्य प्राकृत भाषा में लिखा गया है,

Scanned with CamScanner

(iii) अपभ्रंश भाषा का प्रयोग 500 ई० से 1000 ई० तक हुआ। जैसे संस्कृत के साहित्यिक रूप को व्याकरणबद्ध कर देने से जनभाषा ने प्राकृत का रूप धारण कर लिया वैसे ही प्राकृत का जब साहित्यिक भाषा के रूप में प्रयोग होने लगा और वे नियमबद्ध कर दी गयी तब देशी बोलियों का नया विकास होने लगा। जिससे विकसित स्वरूप को अपभ्रंश कहा गया।

अपभ्रंश (अप + भ्रंश + घञ्) शब्द का यों तो शाब्दिक अर्थ है 'पतन' किन्तु अपभ्रंश साहित्य में आशय है - प्राकृत भाषा से विकसित भाषा का साहित्य। 'अपभ्रंश' शब्द का प्रयोग सबसे पहले पतंजलि (दूसरी शताब्दी ई० पू०) के महाभाष्य में मिलता है। आचार्य भरत ने नाट्यशास्त्र में इसे आभीरों की भाषा कहा और उसे उपकार बहुला बताया। अपभ्रंश भाषा का प्रयोग कालिदास के नाटक 'विक्रमोर्वशीय' में निम्नवर्ग के पात्रों द्वारा किया गया है। छठी शताब्दी के अलंकारवादी आचार्य 'भामह' ने भी अपभ्रंश का उल्लेख संस्कृत एवं प्राकृत के साथ करते हुए इसे काव्योपयोगी भाषा बताया है। अपभ्रंश भाषा के प्रमुख रचनाकार - स्वयंभू को अपभ्रंश का वाल्मीकि कहा जाता है इनकी रचना है - पउमचरिउ धनपाल की रचना 'भविस्यत कहा' अपभ्रंश का पहला प्रबंध काव्य है। आधुनिक आर्यभाषाओं का विकास इसी अपभ्रंश भाषा से हुआ है।

अपभ्रंश के भेद	आधुनिक भारतीय आर्य भाषा
1. शौरसेनी अपभ्रंश	पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती
2. अर्द्धमागधी	पूर्वी हिन्दी
3. मागधी	बिहारी, उड़िया, बंगला, असमिया
4. खस	पहाड़ी (शौरसेनी से प्रभावित)
5. ब्राचड़	पंजाबी (शौरसेनी से प्रभावित), सिंधी
6. महाराष्ट्री	मराठी

अवहट्ट - अवहट्ट अपभ्रंश और आधुनिक भाषाओं के बीच की कड़ी है। यह मोटे रूप से 900 ई० से 1100 ई० तक निर्धारित किया गया है। वैसे साहित्य में इसका प्रयोग 14वीं सदी तक होता रहा है। अवहट्ट 'अपभ्रष्ट' शब्द का विकृत रूप है। इसे अपभ्रंश का अपभ्रंश या 'परवर्ती अपभ्रंश' कह सकते हैं।

(1) इसमें वे सभी ध्वनियां थीं जो अपभ्रंश में थीं, पुराने 'अइ' का विकास 'ऐ' (भुजपति > भुवइ > भुवैं) में तथा 'अउ' का विकास 'औ' (चतुः हाटक > चउहट्ट > चौहट्ट में हुआ।

(2) स्वर-संकोचन की प्रवृत्ति मिलती है। जैसे -
मयूर > मऊर > मोर

(3) अकारण या स्वतः अनुनासिकता भी मिलती है जैसे - अश्रु > अस्सु > आंसू।

(4) क्षतिपूरक दीर्घीकरण - इसमें व्यंजन-द्वित्व के स्थान पर एक व्यंजन हो जाता है अतः इस व्यंजन की अनुपस्थिति के कारण हुई मात्रिक क्षति की पूर्ति के लिए पूर्ववर्ती स्वर दीर्घ हो जाता है - कार्य > कज्ज > काज, कर्म > कम्म > काम।

(5) अन्त्य -ए, -ओ ह्रस्व होकर -इ, -उ हो गए - खग्गे > खग्गि > खगि

(6) स्वर मध्यग -म- प्रायः -व- मिलता है - सम -> सँव पूर्ववर्ती स्वर अनुनासिक हो जाता है।

(7) पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग में काफी रूप समान हो गए।

(8) एह, जेह, केह, जैसे नए सर्वनाम प्रयोग में आने लगे।

(9) अवहट्ट साहित्य में कुरबक, बेमान, तकतान, तख्त, पोजा आदि विदेशी शब्द तथा फुंडा, छ्वेंड़, घाड़ा आदि देशज शब्द मिलते हैं। अवहट्ट के प्रमुख रचनाकार अब्दुर रहमान (संदेशरासक), दामोदर पंडित (उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण), ज्योतिरीश्वर ठाकुर (वर्णरत्नाकर), विद्यापति (कीर्तिलता) आदि हैं। विद्यापति प्राकृत की तुलना में अपनी भाषा को मधुरतर बतलाते हैं -

'देसिल बयना सब जन मिट्ठा। तें तैसन जम्पओ अवहट्ठा।'

अर्थात् देश की भाषा सब लोगों के लिए मीठी है, इसे अवहट्ट कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

पुरानी हिन्दी :- पुरानी हिन्दी से अभिप्राय है - अपभ्रंश अवहट्ट के बाद की भाषा। मध्यदेशीय भाषा-परंपरा की विशिष्ट उत्तराधिकारिणी होने के कारण हिन्दी का स्थान आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं में सर्वोपरि है। पुरानी हिन्दी को प्राचीन हिन्दी, प्रारंभिक हिन्दी या आदिकालीन हिन्दी भी कहा जाता है। हिन्दी साहित्य का आदिकाल हिन्दी भाषा का शिशु काल है। यह वह काल था जब अपभ्रंश-अवहट्ट का प्रभाव हिन्दी भाषा पर मौजूद था और हिन्दी की बोलियों के निश्चित व स्पष्ट स्वरूप विकसित नहीं हुए थे। पुरानी हिन्दी एवं अपभ्रंश में निम्नलिखित अंतर है।

(1) अपभ्रंश में केवल आठ स्वर थे - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ। ये आठों ही मूल स्वर थे। आदिकालीन हिन्दी में दो नए स्वर ऐ, औ और विकसित हो गए, जो संयुक्त स्वर थे तथा इनका उच्चारण क्रमशः अए, अओ था।

(2) च, छ, ज, झ अपभ्रंश में स्पर्श व्यंजन से किन्तु हिन्दी में आकर ये स्पर्श - संघर्षी हो गए।

(3) न, र, ल, स ध्वनियां अपभ्रंश में दंत्य ध्वनियां थीं; जबकि हिन्दी में ये वर्त्स्य ध्वनियां हो गयीं।

(4) अपभ्रंश में ड़, ढ़ ध्वनियां नहीं थीं। जबकि हिन्दी में थी।

(5) न्ह, म्ह, ल्ह अपभ्रंश में संयुक्त व्यंजन थे जो हिन्दी में आकर क्रमशः न, म, ल के महाप्राण रूप हो गए। अर्थात अब ये संयुक्त व्यंजन न रहकर मूल व्यंजन बन गए।

(6) संस्कृत, फारसी के कुछ शब्द हिन्दी में आ गए थे जिससे कुछ नए संयुक्त व्यंजन, जो अपभ्रंश में नहीं थे हिन्दी में आ गए।

(7) अपभ्रंश एक ऐसी भाषा थी जिसमें क्रिया एवं कारकीय रूप संयोगात्मक होते थे किन्तु पुरानी हिन्दी में वियोगात्मक रूपों की प्रधानता दिखायी पड़ी है।

Scanned with CamScanner

(8) सहायक क्रियाओं एवं परसर्गों का हिन्दी में प्रयोग होने लगा जो उसकी वियोगात्मक प्रकृति का परिचायक है।
(9) हिन्दी वाक्य रचना में शब्द क्रम धीरे धीरे निश्चित होने लगा जो अपभ्रंश में पूर्ववर्ती भाषाओं की भाँति अनिश्चित था।
(10) हिन्दी के शब्द भंडार में संस्कृत शब्दावली के साथ-साथ पश्तो, फारसी, तुर्की के शब्द भी प्रयुक्त होने लगे।

सारतः कहा जा सकता है कि भारतीय आर्य भाषाओं [redacted] का विकास अपभ्रंश के क्षेत्रीय भेदों से हुआ है। इस विवेचन के आधार पर भाषाओं के क्रमिक विकास को निम्न रूप में समझा जा सकता है —

वैदिक संस्कृत > संस्कृत > पालि > प्राकृत > अपभ्रंश > अवहट्ट > हिन्दी एवं अन्य आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएं।

Scanned with CamScanner